KAAV INTERNATIONAL JOURNAL OF ARTS, HUMANITIES & SOCIAL SCIENCES
A REFEREED BLIND PEER REVIEW QUARTERLY JOURNAL
KIJAHS/OCT-DEC2017/VOL-4/ISS-4/A1 PAGE NO.1-4
ISSN: 2348-4349 IMPACT FACTOR (2017) – 7.9183
WWW.KAAVPUBLICATIONS.ORG

अनुसूचित जाति की महिलाओं की धार्मिक आकांक्षाएँ

[1]डा0 कविता गोयल
[1]असिस्टेंट प्रोफेसर, श्यामलाल सरस्वती (पी0जी0) महाविदयालय
शिकारपुर, बुलन्दशहर

भारतीय समाज अनेक धार्मिक संगठनों में विभक्त है। ये धार्मिक संगठन सामाजिक शक्ति को विश्वास के आधार पर संगठित करने में सहायक होते है। यह विश्वास केवल सैद्वान्तिक पक्ष का ही घोतक नहीं बल्कि हमारे व्यवहारिक जीवन को भी प्रभावित करता है। इसीलिए प्रसिद्व अमेरिकी शिक्षाविद ब्राउन का कथन है कि ''धर्म केवल विश्वास की ही चीज नही वरन् वास्तविक जीवनचर्या और आचरण है जिसके अर्न्तगत सामूहिक तथा व्यक्तिगत दोनों प्रकार के वयवहार आते है।'' धर्म के व्यक्तिगत और सामाजिक पक्ष को स्पष्ट करते हुए उन्होने धर्म के वैयक्तिक पक्ष को काफी मूल्यवान माना है। किन्तु ऐतिहासिक दृष्टि से धर्म की प्रकृति को उन्होने मुख्य रुप से सामाजिक ही स्वीकारा है। उनका कहना है कि ''समस्त सांस्कृतिक प्रतिमान को प्रभावित करने तथा बालक के व्यक्तित्व को सुविकसित करने में परिवार और विघालय की भाँति धर्म का भी उतना ही महत्वपूर्ण उत्तरदायित्व है।'' भारतीय जीवन दर्शन में धर्म एक महत्वपूर्ण भूमिका रही है। हमारे सांस्कृति एंव नैतिक मूल्यों के निर्माण में उसका विशेष योगदान रहा है। परिणामतः दोनो को एक दूसरे से अलग करना कठिन हैं । समाज और संस्कृति द्वारा निश्चित और परिभाषित मूल्य व्यक्ति की अभिवृत्तियों का निर्माण करते हैं ये अभिवृत्तियाँ ही उसके व्यवहारो को एक निश्चित दिशा प्रदान करती हैं भारतीय समाज में सामाजिक सांस्कृतिक मूल्यों के क्षेत्र में दो प्रकार की स्थिति पायी जाती है। एक ओर परम्परागत सामाजिक सांस्कृतिक मूल्य है जो शताब्दियों से भारतीय सामाजिक जीवन के अंग बने हुए है। दूसरी ओर पाश्चात्य संस्कृति और परिवर्तन के नवीन कारकों के परिणामस्वरुप अनेक प्रकार के नवीन आधुनिक मूल्यों का भारतीय समाज में प्रवेश हुआ है। इन सामाजिक सांस्कृतिक परिवर्तनों को भारतीय समाज वैज्ञानिकों ने ''प्रक्रिया मूलकों संप्रत्यय से विवेचित किया है।'' जिसका मूल आशय संस्कृति मूलक ही है संगठनात्मक नहीं ।

प्रत्येक समाज में धर्म का अस्तित्व होता है समाज को संगठित रखने तथा उसे अपनी परिस्थितियों का सामना करने एंव सम्बल प्रदान करने मे धर्म का विशेष महत्व होता है। सामाजिक जीवन में इसके महत्व को किसी भी प्रकार नकारा नही जा सकता । डेविस ने कहा है कि ''किसी भी मानव समाज का ऐसा सर्वव्यापी साश्वत तत्व है जिसे समझे बिना समाज के रुप को समझा ही नहीं जा सकता ।'' धार्मिक विश्वास के प्रति समाज में कई प्रकार की धारणाएं प्रचलित है। कुछ लोग धर्म को कुछ विशेष प्रकार के व्यवहारों की संस्था मानते है। कुछ लोग इसे सांस्कृतिक जीवन से संबंधित इकाई के रुप में भी स्वीकार करते है। जिनका निर्माण पवित्र विश्वासों एंव विचारों तथा इन्हें व्यक्त करने वाले बाहरी आचरणों से होता है। लिन्टन यिंगर के अनुसार धर्म वह व्यवस्थित प्रयास है जिससे हम जीवन की महत्वपूर्ण आवश्यकताओं को पूरा कर सकें ।

धार्मिक क्रियाएं निश्चय ही हमारे सामाजिक जीवन को प्रभावित करती है। धर्म मानव समुदाय को एक दूसरे से सम्बद्व करने में सहायक है तो वैयक्तिक दृष्टि से व्यक्ति के आचरणों को व्यवस्थित कर उसके माध्यम से उसके सामाजिक संगठन को सुदृढ करने में भी सहायक होता है। जीवन की असफलताओं के बीच धर्म से व्यक्ति को एक आशा रहती है। धर्म उसे अपने जीवन को अपनी आकांक्षाओं के अनुरुप बनाने की प्रेरणा देता रहता है। मानव जीवन में उत्पन्न होने वाले मानसिक तनावों को दूर करने तथा उनसे छुटकारा दिलाकर मानसिक शक्ति प्रदान करने में धर्म की महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

Copyright © 2017 Published by kaav publications. All rights reserved www.kaavpublications.org

शोध प्रारुप – प्रस्तुत शोध प्रपत्र का मुख्य उद्देश्य अनुसूचित जाति की महिलाओं की धार्मिक आकांक्षाओं की विवेचना करना है। प्रपत्र हेतु उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ जनपद के दो विकासखण्ड (लोधा तथा जवाँ) का चयन किया गया है। ये दोनो विकासखण्ड विकास की दृष्टि से मध्यम वर्ग के विकास खण्ड है / अलीगढ़ जनपद की कुल जनंसख्या 29,92,286 है जिसमे अनुसूचित जाति की कुल जनसंख्या 6,34,270 है। जिसमें 3,40,763 पुरुष तथा 2,93,507 स्त्रियों है। अलीगढ़ जनपद की अनुसूचित जाति की कुल जनसंख्या में 4,93,031 जनसंख्या ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करती है तथा 1,41,239 जनसंख्या नगरीय क्षेत्र में निवास करती है अलीगढ़ जनपद के लोधा तथा जवाँ विकास खण्डों के 200 अनुसूचित जाति को महिलाओ को इस अध्ययन में सम्मिलित किया गया है। अध्ययन की सुविधा के लिए सर्वप्रथम दोनो विकासखण्डों में स्थित ग्रामों की एक सूची बना ली गई । पुनः लाटरी पद्वति से उन ग्रामों में से 10 ग्रामों का चयन किया गया । तत्पश्चात् इन 10 ग्रामों में से प्रत्येक गाँव से 20 महिलाओं का चयन सोद्देश्यपूर्ण आधार पर किया गया ।

उ**पलब्धियाँ**– अनुसूचित जाति की महिलाओ की धार्मिक स्थिति को जानने के लिए उनसे प्रश्न पूछा गया – '' आप किस धर्म को मानती है।'' इसका उत्तर प्राप्त करने के लिए अनुसूची में दिए पाँच विकल्पों में से एक को चुनने के लिए कहा गया था। जिसका विवरण तालिका में दिया गया है।

तालिका संख्या – 1
उत्तरदाताओं की धार्मिक स्थिति

धार्मिक स्थिति	उत्तरदाता	
	आवृत्ति	प्रतिशत
हिन्दू	160	80%
बौद्व	22	11%
इस्लाम	6	3%
सिक्ख	&	&
कबीर पंथी	12	6%
योग	200	100%

उपर्युक्त तालिका के सांख्यिकीय विश्लेषण से ज्ञात होता है कि अधिकाँश अर्थात् 80 प्रतिशत उत्तरदायी हिन्दू धर्मावलत्बी है। 11 प्रतिशत उत्तरदायी बौद्व धर्म , 3 प्रतिशत उत्तरदायी इस्लाम धर्म तथा 6 प्रतिशत उत्तरदायी कबीर के मत को मानती है।

पूजा – पाठ एंव नमाज के प्रति विश्वास– पूजा – पाठ एंव नमाज धार्मिक मूल्यों के वाह्य स्वरुप है जो कर्मकाण्ड आदि के रुप में समझे जाते है। इन सबका प्रभाव व्यक्ति के आचरण पर भी पड़ता है। परम्परागत रुप से ये कृत्य वैयक्तिक एंव सामाजिक कर्मकाण्ड के रुप में पहले समाज के कुछ जाति एंव वर्ग विशेष के लोगों तक सीमित थे किन्तु सामाजिक विकास के क्रम में सामाजिक दृष्टि से ये पुरोहित या ब्राह्मणों तक भले ही सीमित रहे है किन्तु वैयक्तिक स्तर पर संस्कृतीकरण की प्रकिृया के अर्न्तगत ये समाज के सभी वर्गों मे अपनायें जाने लगें है। इस दृष्टि से अनुसूचित जाति की महिलाओं से यह पूछा गया था – ''क्या आप पूजा पाठ या नमाज में विश्वास करते है?'' इसका उत्तर 'हॉ' या 'नही' में प्राप्त किया गया ।

तालिका संख्या – 2
पूजा – पाठ या नमाज में विश्वास

	क्या आप पूजा – पाठ या नमाज में विश्वास रखते है।		
	हॉ	नही	योग
ग्राम	122	06	128
	61%	3%	64%
नगर	62	10	72
	31%	5%	36%
योग	184	16	200
	92%	8%	100%

Copyright © 2017 Published by kaav publications. All rights reserved www.kaavpublications.org

तालिका संख्या 2 से स्पष्ट है कि 92 प्रतिषत महिलाए पूजा – पाठ एंव नमाज मे विश्वास करती है। केवल 8 प्रतिशत महिलाओ की आस्था इसके प्रति नही हैं । इस दृष्टि से स्पष्ट है कि ग्राम एंव नगर के परिवेश का कोई विशेष अन्तर नही है।

देव अराधना की अभिवृत्ति – आस्था और विश्वास एक प्रकार से सैद्वान्तिक पक्ष है। देव अराधना की अभिवृत्ति उनके व्यवहारिक आचरण की घोतक होती है। इस दृष्टि से दूसरा प्रश्न किया गया था– '' यदि आप पूजा – पाठ को महत्व देते है तो क्या किसी देवी देवता की अराधना करते है?'' इसका उत्तर भी 'हॉ' , 'नही' तथा अनुत्तरित के क्रम में लिया गया।

तालिका संख्या – 3
महिलाओं के देव – आराधना की अभिवृत्ति

किसी देवी देवता की आराधना	उत्तरदाता		योग	
ग्राम	हॉ	नही	अनुत्तरित	
	98	08	8	114
	49%	4%	4%	57%
नगर	52	18	16	86
	26%	9%	8%	43%
योग	150	26	24	200
	75%	13%	12%	100%

तालिका संख्या–3 से स्पष्ट है कि सम्पूर्ण सूचनादात्री महिलाओं में से तीन चौथाई 75 प्रतिशत महिलाओ में देवी देवताओ की आराधना की अभिवृत्ति हैं। केवल 13 प्रतिशत महिलाऐ पूजा– पाठ की व्यवहारिक प्रक्रिया देवाराधना की प्रवृत्ति से अलग है। 12 प्रतिशत महिलाओं ने कोई उत्तर नही दिया । तालिका संख्या 2 और 3 के तुलनात्मक विवेचन से स्पष्ट होता है कि सैद्वान्तिक स्तर पर पूजा – पाठ और नमाज में विश्वास रखने वाले कुल 92 प्रतिशत महिलाओं में से व्यवहारिक स्तर पर केवल 75 प्रतिशत महिलाऐ ही देवाराधना की अभिवृत्ति रखते है।

तालिका संख्या– 4
आराधना के प्रति झुकाव के कारण

कारण	आवृत्ति	प्रतिशत
मनोवांछित फल की प्राप्ति	80	40%
आध्यात्मिक शन्ति की प्राप्ति	26	13%
परिवार के अन्य लोगों का अनुकरण	40	20%
अन्य कोई कारण (अनुत्तरित)	04	02%
योग	150	75%

तालिका संख्या– 4 में यह देखने का प्रयास किया गया है कि ये महिलाएं आराधना को विशेष महत्व क्यों देती हैं। इसके विश्लेषण से स्पष्ट है कि 40 प्रतिशत महिलाएं इस विश्वास के साथ आराधना करती है कि उन्हे इससे मनोवांछित फल की प्राप्ति होती है। 13 प्रतिशत महिलाएं आराधना द्वारा आध्यात्मिक शान्ति का अनुभव करती है किन्तु 20 प्रतिशत महिलाएं अपने परिवार के अन्य लोगों के आचरण से प्रभावित होकर या उनका अनुकरण करते हुए देवाराधना में प्रवृत्त है। 2 प्रतिशत महिलाएं किन्ही अन्य कारणों से अनुत्तरित है। स्पष्ट है कि देवाराधना की अभिवृत्ति वाली महिलाओं में सबसे अधिक 40 प्रतिशत महिलाएं ''मनोवांछित '' फल प्राप्ति हेतु आराधना करती है। यह प्रवृत्ति उनकी रूढ़िवादी या अन्ध विश्वासी प्रवृत्ति की घोतक है। इस प्रकार से इससे आराधना के प्रति परम्परागत विश्वास का भी बोध होता है।

निष्कर्ष– प्रस्तुत शोध प्रपत्र के निष्कर्ष के रूप में कहा जा सकता है–

1. अनुसूचित जाति की अधिकांश उत्तरदायी हिन्दू धर्मावलम्बी है।
2. नगरीय अनुसूचित जाति की महिलाओं की अपेक्षा ग्रामीण अनुसूचित जाति की महिलाऐं पूजा– पाठ या नमाज में अधिक विश्वास रखती है।

Copyright © 2017 Published by kaav publications. All rights reserved www.kaavpublications.org

3. नगरीय अनुसूचित जाति की महिलाओं की अपेक्षा ग्रामीण अनुसूचित जाति की महिलाऐ देवी– देवता की आराधना अधिक करती है।
4. सर्वाधिक अनुसूचित जाति की महिलाओं का कथन है कि आराधना से मनोवांछित फल प्राप्ति होती है।

संदर्भ

1. ''ब्राउन शैक्षिक समाज विज्ञान ' अनुवादक श्री ब्रजभूषण शर्मा, उत्तर प्रदेश ग्रन्थ अकादमी प्रथम संस्करण ,1974,पृ0 497
2. वही पृ0 503
3. इस दिशा मे एम0एन0 श्रीनिवास का योगदान महत्वपूर्ण है उन्होने भारतीय समाज के परिवर्तन प्रकिृया में संस्कृतीकरण , पश्चिमीकरण और लौकिकीकरण के संप्रत्ययों की व्याख्या की है। आधुनिक भारत में सामाजिक परिवर्तन – श्रीनिवास एम0एन0, राधाकमल प्रकाशन 1967,पृ0 22
4. डेविस किंग्सले ,'ह्यूमन सोसायटी ,' दि मैकमिलन काचनी न्यूयार्क , 1949 पृ0 509
5. मैलिनोवस्की , ''मैजिक साइन्स एण्ड अदर ऐसेज, '' पृ0 24
6. क्यूबर एफ0 जे0, '' सोशियोलॉजी एपिलटन न्यूर्याक , 1968 511यंगर जे0 मिल्टन, ''रिलीजन, सोसाइटी एण्ड दि इन्डीविजुअल ,' पृ0 12
7. Aligarh District Hand Book, Part – A 2001 Govt. of. India, Publication Division New Delhi.

KAAV

Copyright © 2017 Published by kaav publications. All rights reserved www.kaavpublications.org